इक़रो

नात व मनकबत शरीफ

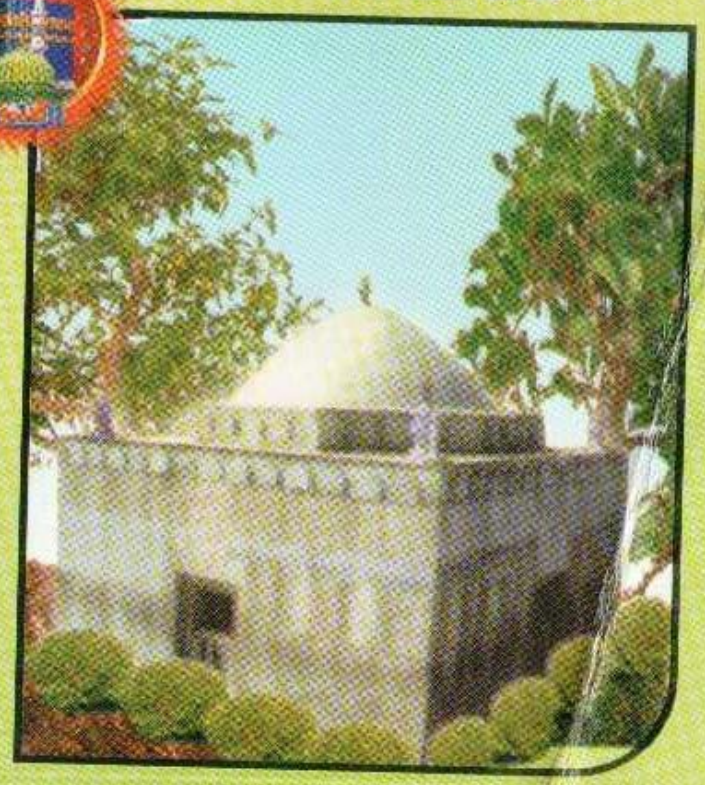

सय्यद महज़र अली महज़र ज़ाफ़री वक़ारी मदारी, मकनपुरी
सज्जादा नशीन आसतानए आलिया मदारिया
Ph.: 05112-237019 Cell : 9935586434

* नाशिर *
मो. सलीम शाह (बागवाले)
सदर, जिला इज़्तिमाई शादी कमेटी, मन्दसौर (म.प्र.)

इक़रा

सय्यद महज़र अली महज़र जाफरी
वक़ारी मदारी, मकनपुरी
सज्जादा नशीन
आसतानए आलिया मदारिया
Ph. - 05112-237019
Mob. - 9935586434

नात व मनकबत शरीफ

- नाशिर -
मो. सलीम शाह (बागवाले)
सदर, जिला इज्तिमाई शादी कमेटी

- किताब मिलने का पता -
मस्जिद - ए - बिलाल
नई आबादी, मन्दसौर (म.प्र.)

بسم اللہ الرحمن الرحیم

इन्तिसाब

अपनी वालिदा नुज़हतुन्निसा और
अदीब व नियाज़ व खावर के नाम,
जिन की जूतियां सीधी करने की,
सआदत मुझे हासिल है।

और

अपनी बेटी इकरा के नाम,
जिसको बिन्ते रसूल
सय्यदा फातेमा ज़हरा की
बेटी होने का शरफ हांसिल है।

..... महज़र मदारी

फेहरिस्त

क्र.	नात व मनकबत शरीफ	पेज नं.
1.	रूए मुस्तफा	1
2.	दयारे होश	2
3.	पन्जतन का सफीना	3
4.	हासिले सन्अत	4
5.	नज़रे करम	5
6.	आईनए आलम	6
7.	मन्सबे महबूबियत	7
8.	गेसूए अहमद	8
9.	कुर्आन की तफ्सीर	9
10.	खुलूसे दिल	10
11.	तैबा	11
12.	अर्श के मेहमान	13
13.	इत्र बेज़ी	14
14.	दामने रहमते आलम	15
15.	दीदारे जमाल	16
16.	गेसुए अहमद	17
17.	शहरे हबीब-ए-खुदा	18
18.	नुक्तए मुहब्बत	19
19.	वो भी इतनी रात गए	20
20.	नबी का बचपन	21
21.	आका का इशारा	24
22.	कूए मदार	25
23.	मुखलिफ देख ले	26
24.	हांसिले जुस्तुजू	27
25.	नकाबे रूख	29

फेहरिस्त

क्र.	नात व मनकबत शरीफ	पेज नं.
26.	करम की घटा	31
27.	अली का नूरे नज़र	32
28.	जमाले रुखे मुस्तफा	34
29.	फजाए हिन्द	35
30.	अन्दाज़े हिदायत	37
31.	सुहाना ख्वाब	38
32.	वुफूरे करम	39
33.	अपना फसाना	40
34.	मसरूफे दुआ	42
35.	अदा ए मुस्तफा	44
36.	हौसला दो मुस्तफा	45
37.	मताये इश्के नबी	47
38.	दुरूदो सलाम	49
39.	चश्मे तसव्वुरात	50
40.	आरज़ू का दिया	51
41.	साँसो का जीवन	52
42.	खानये साबू	54
43.	जन्ज़ीर-ए-निसबत	55
44.	बदरे कामील	57
45.	विपदा की दिवार	58
46.	दामने मसर्रत	60
47.	मुस्तफा आ गये	62
48.	वफा का आईना	64
49.	ज़र्मी का मुकद्दर	65
50.	चिरागे हलब	66

रुए मुस्तफा

शजर मकनपुरी

करम है ये रूए मुस्तफा का के चाँद ने पाई चाँदनी है
ये जुल्फे वल्लैल का है सदका के बन गई रात सुरमई है

है ज़र्रा-ज़र्रा तेरा नगीना अजब है तू गुलशने मदीना
हर एक कली मुस्कुरा रही है हर एक गुल पर शगुफ्तगी है

अरब का वो दौर जाहिलाना वो बातों-बातों में खूँ बहाना
तुम्हारी सीरत का मोअजज़ा है के छा गई अम्नो आशती है

फेराके तैबा की बेकरारी गुजारी रो-रो के रात सारी
हमारे अश्कों का है तसर्रुफ के बन गई सुब्ह शबनमी है

उसी ने पाई है सर बलन्दी मुबारक उसको नियाजमन्दी
बड़ा मुकद्दर का वो धनी है नबी की चौखट जिसे मिली है

हर एक बर्गो शजर है सदके हर एक बागो समर फ़िदा है
रियाज़े खज़रा की पत्तियों पर निसार जन्नत की हर कली है

दयारे होश

भरोसा पल का नहीं ये घड़ी मिले न मिले
चलो मदीनें ये मौका कभी मिले न मिले।

तू जज़्बे शौक को अपना बना रफीके सफर
सफर तवील है साथी कोई मिले न मिले।

सरे नियाज़ हरर एक गाम पर लुटा सजदे
तुझे मदीने की फिर ये गली मिले न मिले।

हुजूर जिस में हो बाली पे जलवागर मालिक
मिले वो मौत मुझे जिन्दगी मिले न मिले।

उसे तू सेहने हरम में सलाम करता चल
दयारे होश में दिवानगी मिले न मिले।

निहाल क्यों न हों दीदे जमाले ख़ज़रा से
के दिन को फिर कभी ऐसी खुशी मिले न मिले।

सुना दे झूम के अश्आरे नात अय महज़र
के फिर फजाए दयारे नबी मिले न मिले।

पन्जतन का सफीना

मैं नोश हूँ है कितने करीने की आरजू
मैखानए नबी से है पीने की आरजू।
उस आशिके रसूल कीं नस्लें महेक उठीं
थी जिसके दिल में उनके पसीने की आरजू।

जब से रसूले पाक ने है रख दिये कदम,
जन्नत भी कर रही है मदीने की आरजू ।
ऑखों के सामने है समन्दर गुनाह का,
रखता हूँ पन्जतन के सफीने की आरजू ।

इक सिम्त मेरा ज़ेहन है इक सिम्त मेरा दिल,
मक्के की है तलाश मदीने की आरजू।
यूँ दिल को इश्के सरवरे आलम की है तलब
जैसे करे अंगूठी नगीने की आरजू।

शायद किया है याद दयारे रसूल ने,
बेचैन कर रही है मदीने की आरजू।
बु जेहल चाहता था न हो दीन का फरोग
पूरी न हो सकी ये कमीने की आरजू।

कुत्बुल्मदार तैबा से जो ले के आए हैं,
महेज़र है मुझको ऐसे दफीने की आरजू।

हासिले सन्अत

रूहे कौनैन है कुरबान मदीने वाले
मरहबा कितने है ज़ीशान मदीने वाले।

रिफ्अते औजे हर इम्कान मदीने वाले
हासिले सन्अते रहमान मदीने वाले।

मैं भी पहुचूँ कभी तैबा में भिखारी बनकर
मेरे दिल में है ये अरमान मदीने वाले।

किस तजम्मुल से सरे अर्श बरी पहुँचे हैं,
बनके अल्लाह के मेहमान मदीने वाले।

मेरी जानिब भी कभी उट्ठे इनायत की नज़र,
मेरी मुश्किल भी हो आसान मदीने वाले।

सैले तूफाने हवादिस का हमें क्या खतरा
जब हमारे है निगहबान मदीने वाले।

मिदहते पाक में दे अपनी जबाँ को जुम्बिश,
आदमी का नहीं इम्कान मदीने वाले।

रहमतें आपने बरसाई गुनहगारों पर,
आपका कितना है एहसान मदीने वाले।

मुम्मइन दिल है मेरा रोज़े जज़ा से महज़र,
मेरी बख़्शिश के है सामान मदीने वाले।

नज़रे क़रम

नहीं दुनियाँ में है कोई हमारा या रसूलल्लाह,
सहारा या रसूलल्लाह सहारा या रसूलल्लाह।

है गर्दिश में मुकद्दर का सितारा या रसूलल्लाह,
बस इक नज़रे करम हम पर खुदारा या रसूलल्लाह।

दिया है आपने उसको सहारा या रसूलल्लाह,
किसी ने आपको जिसदम पुकारा या रसूलल्लाह।

मदीने की तरफ जाता हुआ जब कोई मिलता है,
तड़पता है दिले बेकस हमारा या रसूलल्लाह।

मयस्सर हो कभी सरकार ये दिल की तमन्ना है,
नज़र को आपके दर का नज़ारा या रसूलल्लाह।

है महज़र हिन्दी में आप है गुलज़ारे तैबा में,
कहाँ तक दिल करे इसको गवारा या रसूलल्लाह।

आईनए आलम

इलाजे हर बलाए गम हैं कमली ओढ़ने वाले,
मेरे मानिस मेरे हमदम है कमली ओढ़ने वाले।

करम की इक नज़र कर दीजिये सदका नवासों का,
सितम दुनियॉ के अब पैहम है कमली ओढ़ने वाले।

हुए है मुन्अकिस हुस्नोकबा के ज़ाविये जिसमें,
वही आईनए आलम है कमली ओढ़ने वाले।

ज़े आदम ताबईसा हर नबी ने ये शहादत दी,
खुदा के बाद बस आज़म है कमली ओढ़ने वाले।

उसी दर पे बुला लीजे खुदारा अब तो महज़र को,
जहाँ सब की जबीनें ख़म है कमली ओढ़ने वाले।

मन्सबे महबूबियत

मोनिसो हमदर्दे आलम हैं मेरे प्यारे नबी,
मरहबा कितने मुकर्रम हैं मेरे प्यारे नबी।
मन्सबे महबुबियत पे कोई भी फायज़ नहीं,
सारे नबियों में मुअज़्ज़म है मेरे प्यारे नबी।

अय ज़माने वालों मुझको बेसहारा मत कहो,
मेरे मानिस मेरे हमदम हैं मेरे प्यारे नबी।
सन्गरेज़े बोल उठे हाथ में बूजेहल के
अज़्मतों वाले है आज़म हैं मेरे प्यारे नबी।

आपकी सीरत ही काफी है तसल्ली के लिये,
गम नहीं जो सैकड़ो गम हैं मेरे प्यारे नबी।
कोई ढूंढे भी तो पाए आपका साया कहॉ,
आप तो नूरे मुजस्सम हैं मेरे प्यारे नबी।

खुल्द में जाने से महज़र कौन रोकेगा मुझे,
जब शफिये हर दो आलम है मेरे प्यारे नबी।

गेसूए अहमद

इश्के अहमद में असीरे गमे हिजराँ होकर,
बैठा गुरबत में हूँ फिरदौस बदामाँ होकर।

मेरे आका ने किए चाँद के जब दो टुकड़े,
मुश्रकीं रह गये अंगुश्त बदन्दाँ होकर।

देखना हश्र में छा जाएंगे रहमत बनकर,
गेसुए अहमदे मुख्तार परीशाँ होकर।

जब कोई जाता नज़र आया मदीने की तरफ,
रह गया दिल मेरा मजबूरो हिरासाँ होकर।

चाँद सूरज तो इशारे पे मोहम्मद के चलें,
हाए वो लोग जो झुक पाए न इन्साँ होकर।

आज भी कदमों में दुनियाँ हो मुसलमानों के,
बन सकें पैरवे सरकार जो यकजाँ होकर।

महज़र उस दम मेरे सरकार तड़प जाते हैं,
उम्मती कोई पुकारे जो परीशाँ होकर।

कुर्आन की तफ्सीर

जब के कुर्आन की तफ्सीर है सीरत तेरी
क्यों न अल्लाह की ताअत हो इताअत तेरी।

तेरे साए से न मैं गुम्बदे ख़जरा हटता,
मेरी किस्मत में जो होती कहीं कुरबत तेरी।

इक गुनहगार का दिल और तेरे महबूब की याद,
वाकई है मेरे अल्लाह इनायत तेरी।

आस्माँ हो के ज़मीं हो के सरे अर्श बरीं,
मेरे आका है हर इक शै पे हुकूमत तेरी।

तेरे दिल में है अगर इश्के मोहम्मद महज़र,
तो खुदा तेरा नबी तेरे हैं जन्नत तेरी।

खुलूसे दिल

जबीं में सजदं छुपाए दरे नबी के लिये,
जूनूने शौक़ है बेताब बन्दगी के लिये।

शबे फेराक़े मदीना में जुल्मतें कैसी,
दिये जलाए हैं पलकों पे रोशनी के लिये।

दरे रसूल पे तख़्सी से ख़ासों आम नहीं,
मेरे हुज़ूर हैं रहमत हर आदमी के लिये।

लहूलुहान हैं ताइफ़ में मालिके कौनेन,
दुआ है फिर भी लबों पर हर उम्मती के लिये।

रसूले पाक को कांधों पे ले चले सिद्दीक़,
उरूज रक्खा था हक़ ने ये आप ही के लिये।

दुआएं मांग के मिल जाए दिल को ये नेअमत,
ग़मे रसूल जरूरी है जिन्दगी के लिये।

ख़ुलूसे दिल से करो ज़िक्रे मुस्तफा महज़र,
हर इज़्तराब में तसकीने दाइमी के लिये।

तैबा

हिज्रे तैबा में जब कहा तैबा,
खिंच के आखों में आ गया तैबा।

हेच है फिर हर एक नज़्ज़ारा,
बस दिखा दे मुझे ख़ुदा तैबा।

दिल को कह कह के ये तसल्ली दी,
देख नादाँ वो आ गया तैबा।

और है जिनके हैं सहारे और,
है फ़कत अपना आसरा तैबा।

बागे जन्नत न चाहिये मुझको,
रास आई तेरी फज़ा तैबा।

क्यों परीशान हो अय चारागरो,
हर मरज़ की है जब दवा तैबा।

दिलकशी मन्ज़रों की ख़त्म हुई,
दिल में जब से समा गया तैबा।

दोनो है मरकज़े निगाहे जुनूँ,
दिलनशीं काबा दिलरूबा तैबा।

तेरी जन्नत में जी नहीं लगता,
चला रिज़्वान मैं चला तैबा।

हाए करके मैं रह गया महज़र,
ज़ब चला कोई काफ़ला तैबा।

अर्श के मेहमान

ये जो बारगाहे रसूल से कोई दूर कोई करीब है,
ये सब अपनी-अपनी हैं किस्मतें ये अपना-अपना नसीब है।

मैं मरीज़े इश्के रसूल हूँ मुझे चारासाज़ से क्या गरज़,
मुझे दर्द जिसनें आता किया वही दर्दे दिल का तबीब है।

जो उमर मदीने से देनिदा सुने किस तरह से न सारिया,
के ये उस अज़ीम की है सदा जो दरे नबी का ख़तीब है।

वो उखूवतों का सबक दिया के जहान सारापुकार उठा,
न है शाह कोई न है गदा न अमीर है न गरीब है।

वो जो बेकसों पे है मेहरबाँ है वहीं तो बइसे इन्सोजाँ,
है उसी का सदका ये दो जहाँ वो खुदा का प्यारा हबीब है।

है उन्हीं के नूर से मुफ्तख़र बखुदा जबी ने अबुल्बशर,
हो कोई रसूल के हो नबी मेरे मुस्तफा का नकीब है।

कभी जलवा फरमाँ है फर्श पर कभी मेहमान हैं अर्श पर,
कभी लामकाँ पे है जलवागर ये अदा नबी की अजीब है।

चलो महज़र उनकी पनाह में तो जुनूँ को छोड़ दो राह में,
रखो एहतराम निगाह में के वो बारगाहे हबीब है।

इत्र बेज़ी

ये कहते हैं मेरी आँखों के आँसू, पाँव के छाले,
बहारे गुलशने तैबा दिखा दे रहमतों वाले।

लिबास अपना ही क्या जिसकों मज़ा के इत्र बेज़ी हो,
पसीने से रसूलल्लाह के नस्लों को महका ले।

सहाबा इस तरह हल्का किये हाजिर है ख़िदमत में,
के जैसे चाँद को घेरे हुए हैं नूर के हाले।

नहीं अब मुनकिरों को मुँह छिपाने की जगह कोई,
रसूलल्लाह लेकर आ रहे हैं अपने घर वाले।

फरोके अर्ज़े तैबा में तड़पते हो गई मुद्दत,
असर लाते हैं, देखें कब दुखे दिल के मेरे नाले।

तुझे फिर ज़िन्दगी की उल्झने मौका न दें शायद,
मुकद्दर का हर उलझा मसअला तैबा में सुलझा लें।

बुलाएंगे तुझे अबकी बरस आका मदीन में,
दिले मुज़तर को महज़र इस तरह तू अपने समझा ले।

दामने रहमते आलम

दिल को तवाफे गुम्बदे ख़ज़रा सिखाएंगे,
हम ख़ानए खुदा को मदीना बनाएंगे।

रूसवा न होने देंगे वो मैदाने हश्र में,
दामन में अपने रहमते आलम छुपाएंगे।

मुश्किल हैं नात गोई मगर ये यकीन है,
आका संभाल लेंगे जो हम डगमगाएंगे।

हर लब पे होगा तोहफा दुरूदो सलाम का,
नाते रसूले पाक जो हम गुनगुनाएंगे।

जब तक सवारे दोश रहेंगे हुसैने पाक,
सज्दे से सर न रहमते आलम उठाएंगे।

हंस-हंस के जान देते हैं दीवानए रसूल,
जब से सुना है कब्र में सरकार आएंगे।

पहुंचेगा ये भी पाक खजूरों के साए में,
महज़र के भी नसीब कभी जगमगाएंगे।

दीदारे जमाल

है जहाँ बरसरे पैकार मदीने वाले,
आप ही हैं मेरे ग़मख़्वार मदीने वाले।

फ़िक्रे कौनेन से आज़ाद नज़र आता है,
आपके ग़म का गिरफ्तार मदीने वाले।

काश हो जाए मयस्सर तेरा दीदारे जमाल,
तश्ना लब है तेरे मैख़ार मदीने वाले।

मोती बरसाता ही रहता है तेरा अब्रे करम,
तेरा दरबार है दरबार मदीने वाले।

अपना मक्सूदे नज़र क्यों न उसे मिल जाए,
हो जिसे आपका दीदार मदीने वाले।

होंगे महरूम न महशर में भी इन्शा अल्लाह,
तेरी रहमत के तलबगार मदीने वाले।

अर्ज़ कर पेशे मसीहाए ये दो आलम महज़र,
हम भी हैं आपके बीमार मदीने वाले।

गेसुए अहमद

वो गेसूए अहमद मोअंबर मोअंबर,
मदीने की गलियाँ मोअत्तर मोअत्तर।

मदीने में है चश्मो दिल का ये आलम,
मुजल्ला मुजल्ला मुनव्वर मुनव्वर।

जिसे सुन के कल्मा पढ़ें संगरेज़े,
वो है गुफ्तगूए मोअस्सर मोअस्सर।

रसूले मुअज़्ज़म के आनें से पहले,
था माहोल कितना मुकद्दर मुकद्दर।

तलाशे दयारे नबी में फिरा हूँ,
बियाबाँ बियाबाँ समन्दर समन्दर।

हुई जिस की तख़्लीक है अव्वल अव्वल,
वही ज़ाते अली मोअख़्ख़र मोअख़्ख़र।

है आँखों में महज़र जमाले मदीना,
बना अब हमारा मुकद्दर मुकद्दर।

शहरे हबीब-ए-खुदा

बे सहारा थे हम आसरा मिल गया,
यानी दामने ख़ैरूल वरा मिल गया।

अब किसी रहनुमा की ज़रूरत नहीं,
मुझको सरकार का नक्शेपा मिल गया।

मेरी आवारा पाई हुई मुत्मइन,
जब से शहरे हबीबे खुदा मिल गया।

कम है जो नाज़ किस्मत पे उम्मत करें,
बाइसे नाज़िशे अम्बिया मिल गया।

क्या कहे बदनसीबी अबू जेहल की,
कोई पूछे उमर से कि क्या मिल गया।

सो गये मुतमइन हो के शेरे खुदा,
जब उन्हें बिस्तरे मुस्तफा मिल गया।

हैं गरीबों के झूरमूट में जलवाफ़िगन,
हमको आका का महज़र पता मिल गया।

नुक्तए मुहब्बत

शाहकारे कुदरत है आमेना की गोदी में,
दो जहाँ की रहमत है आमेना की गोदी में।

आदमी पे भारी है लम्हा लम्हा हस्ती का,
वक्त की ज़रूरत है आमेना की गोदी में।

जुल्मते जिहालत का क्यों न दिल धड़क उठे,
नूरे इल्मे वहदत है आमेना की गोदी में।

जल्वारेजियाँ जिसकी हैं जबीने आदम में,
हक की वो अमानत है आमेना की गोदी में।

आज हो गया पूरा सिलसिला नूबुव्वत का,
खातमे रिसालत है आमेना की गोदी में।

लगता है सिमट आई कायनात मरकज़ पर,
आज कितनी वुस्अत है आमेना की गोदी में।

अर्शोफर्श सब उसके दायरे के अन्दर है,
नुक्तए मुहब्बत है आमेना की गोदी में।

हुस्ने यूसुफी जिस का इक जमील परतौ है,
वो हसीन सूरत है आमेना की गोदी में।

ज़िन्दगी को जीने का रास्ता मिला महज़र,
हांसिले शरीअत है आमेना की गोदी में।

वो भी इतनी रात गए

दिल इक पल आराम न पाए वो भी इतनी रात गए,
रह रह के तैबा याद आए वो भी इतनी रात गए।

रहमते आलम आपकी यादें काम आ जाती है वरना,
कौन हमारा जी बहलाए वो भी इतनी रात गए।

दिन के उजाले शरमाते है उन नूरानी गलियों से,
आँखों में तैबा खिंच आए वो भी इतनी रात गए।

इश्क का मारा दिल बेचारा जब कोई उसका बस न चला,
हिज्रे नबी में अश्क बहाए वो भी इतनी रात गए।

आलमे तन्हाई में आका तेरा तसव्वुर तेरा जमाल,
सोए एहसासात जगाए वो भी इतनी रात गए।

अपने काफूरी होंटों से चूमे कदम यादे आवाज़,
किस तरह जिब्रील जगाए वो भी इतनी रात गए।

दिल में कसक पैदा होती है आँखें नम हो जाती है,
जब महज़र तू नात सुनाए वो भी इतनी रात गए।

नबी का बचपन

फर्श पर फख्रे इन्सो जाँ आए,
अर्शे आज़म के मेहमाँ आए,
वज्हे तख्लीके दो जहाँ आए,
रश्के खुल्द आमेना का है आँगन,
कैसा प्यारा नबी का है बपचन .....

जिससे कौनेन जगमगाऐंगे वो दिया चाहिये हलीमा को।
दोनों आलम में सुरखुरूई का वास्ता चाहिये हलीमा को।
आज गोदी में रब का है महबूब और क्या चाहिये हलीमा को।

उस सवारी के अब भी है चर्चे,
जिस सवारी पे आप थे बैठे,
जब हलीमा के गाँव में पहुँचे,
भर गए बूढ़ी बकरियों के भी थन,
कैसा प्यारा नबी का है बपचन .....

चेहरए आसमान सूरज की अपने माथे सजाए है बिन्दिया।
माग में कहकशा तो ओढ़े है सर पे कोसो कज़ह का दोपट्टा।
मन्ज़रे कायनात है पहने रंगो अन्वार का हसीं जोड़ा।

है सभी के लिये ये आसाइश,
ये ज़मीं आस्माँ की ज़ेबाइश,
है इसी वास्ते ये आराइश,
जो बनी कायनात है दुल्हन,
कैसा प्यारा नबी का है बपचन .....

यू तिजारत के वास्ते आका चल दिये मुल्के शाम की जानिब।
ये सलीका भी सीखले दुनिया चल दिया मुल्के शाम की जानिब।
चाँद तारे भी लेके नूरी रेदा चल दिये मुल्के शाम की जानिब।

धूप में रेत पर जो वो गुज़रे,
अब्र के शामियाने साथ चले,
कहा राहिब ने ये तो वो गुल है,
जिससे महकेंगे दो जहाँ के चमन,
कैसा प्यारा नबी का है बपचन .....

मेरे प्यारे हुजूर बचपन में खेल से दूर-दूर रहते थे।
देखिये तो कुसूर वालों में रहके भी बेकुसूर रहते थे।
किसी हालत में भी रहें लेकिन अपने रब के हुजूर रहते थे।

उनके पॉव की है जहाँ पैचल,
खार के फर्श बन गये मख़मल,
वो अरब में बबूल के जंगल,
आशिकों के लिये बने गुलशन,
कैसा प्यारा नबी का है बपचन .....

आज आजिज़ है ख़िज्र का महज़र इल्मोफ़न आमेना के आंगन में।
इल्मो हिक्मत का एक दरिया है मोजज़न आमेना के आंगन में ।
नाज़ ख़ालिक को है वो आया है गुलबदन आमेना के आंगन में।

खुश हैं आज आमेनाओ अब्दुल्लाह,
घर पे आए है ख़िज्र और मूसा,
आज जिब्रील भी हैं, बेपर्दा,
उठ गई सिर्रे हक से है चिलमन,
कैसा प्यारा नबी का है बपचन .....

आक़ा का इशारा

दिल ज़ख़्मी परिन्दे की तरह डोल रहा है,
दरबारें नबी के लिये पर तोल रहा है।
सरकार का हो नाम लिखा जिसकी जबीं पर,
पत्थर वही हर दौर में अनमोल रहा है।
उस दौरे जेहालत में गुलामे शहे वाला,
अस्रारे मशीयत की गेरह खोल रहा है।
ख़ालिक ने किये जिस के लिये ख़ल्क़ दो आलम,
तू अपनी तराज़ू में उसे तौल रहा है।
हर चन्द के मुट्ठी में है बू जेहल के पत्थर,
आका के इशारे पे मगर बोल रहा है।
हम सुन्नी मुसलमानों का परवानों के मानिन्द,
सरकार पे मर मिटने का माहौल रहा है।
नाते शहे कौनेन के अश्आर सुना कर,
अमृत सा फज़ाओं में कोई घोल रहा है।
जिस हाथ की निस्बत नहीं दामाने नबी से,
उस हाथ में महेज़र सदा कश्कोल रहा है।

कूए मदार

ज़ेहन है महवे जुस्तुजू-ए-मदार,
दिल को है सिर्फ आरजूए मदार।

कोई महरूमें फ़ैज़ रह न सका,
हर चमन में बसी है बूए मदार।

हर तरफ है तजल्लियों का ज़हूर,
नूर का इक जहाँ है कूए मदार।

रोक पाई न गर्दिशे अय्याम,
जब क़दम बढ़ गए है सूए मदार।

है यही मेरा खुल्द नज़्ज़ारा,
हश्र में सामने हो रूए मदार।

मुखलिफ देख ले

है हमारी जिन्दगी ज़िक्रे मदारूल आलमीं,
हम न छोड़ेंगे कभी ज़िक्रे मदारूल आलमीं।

अपने कल्बे मुज्तरिब को मिल गया सब्रोकरार,
आया जो लब पर कभी ज़िक्रे मदारूल आलमीं।

उस घड़ी गोशे समाअत को अदब सिखलाइये,
कर रहा हो जब कोई ज़िक्रे मदारूल आलमीं।

तज़्किरा गैरों का वज्हे सोरिशो हंगामा है,
रूहे अम्नो आशती ज़िक्रे मदारूल आलमीं।

क्यों हिरासाँ हो रहा है जुल्मतों से मेरे दिल,
तुझको देगा रोशनी ज़िक्रे मदारूल आलमीं।

रोकना जो चाहते हैं वो मुख़ालिफ़ देख लें,
हो रहा है और भी ज़िक्रे मदारूल आलमीं।

काश हो महज़र यही बस जिन्दगी का मश्गला,
ज़िक्रे हक, ज़िक्रे नबी, ज़िक्रे मदारूल आलमीं।

हांसिले ज़ुस्तुजू

बहरे गम हो चला बेकराँ,
अलमदद अय मदारे जहाँ।

हाले दिल अपना क़रने बयाँ,
दर पे आया है इक बेज़ुबाँ।

है सुपुर्द आपके आंशियाँ,
लाख चमका करें बिजलियाँ।

आपका कोई सानी कहाँ,
आप तो है मदारे जहाँ।

मिल गया हासिले जुस्तुजू,
सामने है तेरा आस्ताँ।

क्या करेंगे मेरा हादसे,
आप जब मुझपे है मेहरबाँ।

फैली ईमान की रोशनी,
हिन्द में आए कुत्बे जहाँ।

हम हैं आक़ा गुलाम आपके,
जाएं दर छोड़ के फिर कहाँ।

शम्अे दिल के निगेहबाँ हो तुम,
लाख उठती रहें आंधियाँ।

सिम्ते महज़र भी चश्में करम,
अय अनीसे दिले नातवाँ।

नक़ाबे रुख

हर एक के लब पे है ये सदा,
माशा अल्लाह सुब्हान अल्लाह,
है रश्के जिनाँ तेरा रौज़ा,
माशा अल्लाह, सुब्हान अल्लाह।

दुनियाँ में मिसाली हो के रहा,
माशा अल्लाह, सुब्हान अल्लाह,
वो सोमे दवाम और वो तक्वा,
माशा अल्लाह, सुब्हान अल्लाह।

सूरज की शोआओं पर बदली,
होती है असर अन्दाज़ कहाँ,
पर्दे में भी है है शाने जलवा,
माशा अल्लाह, सुब्हान अल्लाह।

शादाब है जो हर एक चमन,
गुलज़ार बना है अपना वतन,
ये कुत्बे जहाँ का है सदक़ा,
माशा अल्लाह, सुब्हान अल्लाह।

बे आपके कोई भी अरज़ी
जाती ही नहीं है पेशे नबी,
वलियों में ये रूतबा किसको मिला,
माशा अल्लाह, सुब्हान अल्लाह।

इरफाँ है जिन्हें वह कहतें है,
ईसन के तेरे हर कतरे में,
हैं सात समन्दर पोशीदा,
माशा अल्लाह, सुब्हान अल्लाह।

महज़र तू गुलामे कुतबे जहाँ,
और उनके शफीये कौनो मकाँ,
मज़बूत है कितना ये रिश्ता,
माशा अल्लाह, सुब्हान अल्लाह।

करम की घटा

मॉगी ब चश्मे नम जो दुआ झूम-झूम के,
बरसी तेरे करम की घटा झूम-झूम के।

सूरज जो रन्जो गम का मेरे सरपे छा गया,
अबरे करम है लायी सबा झूम-झूम के।

शहरे हलब में आए शहंशाहे औलिया,
हातिफ ये दे रहा है सदा झूम-झूम के।

दुश्वार मरहलों में अकीदत से दममदार,
कहते रहे हम अहले वफा झूम-झूम के।

बाँटेगा आज मस्तियाँ मयखानए मदार,
आवाज़ दे रही है फज़ा झूम-झूम के।

करते है अय मदार सितारे तेरा तवाफ,
होते हैं मेहरो माह फिदा झूम-झूम के।

महज़र वह सुबहे आमदे सरकार अल्लमाँ,
और चलना तेरा बादे सबा झूम-झूम के।

अली का नूरे नज़र

झुका औलिया का है सर अल्लाह-अल्लाह,
मदारे दो आलम का दर अल्लाह-अल्लाह।

मिली ज़िन्दगी जानेमन जन्नती को,
दुआओं का तेरी असर अल्लाह-अल्लाह।

नज़र पड़ती है जब तेरे आस्ताँ पर,
तो कहते है अहले नज़र अल्लाह-अल्लाह।

हर एक लब पे कुतबे जहां तेरी बातें,
हर एक दिल में है तेरा घर अल्लाह-अल्लाह।

करम से तेरे मिल गई उनको मंज़िल,
भटकते थे जो दरबदर अल्लाह-अल्लाह।

मुझे है यकीं आप रखते है आका,
मेरी धड़कनों की ख़बर, अल्लाह-अल्लाह।

हैं आए मुरादों का दामन पसारे,
हुजूरी में जिन्नों बशर अल्लाह-अल्लाह।

नबी से मिला जिसकों नूरे विलायत,
अली का वो नूरे नज़र अल्लाह-अल्लाह।

गुलामें मदारे जहाँ सुए जन्नत,
चला हश्र में बे खतर अल्लाह-अल्लाह।

जहाँ जाइये उनके चिल्ले है महज़र,
मदारे जहां का सफर अल्लाह-अल्लाह।

जमाले रुखे मुस्तफा

जियाए शम्सों कमर है मदारे आलम की,
ये शाम और सहर है मदारे आलम की।

सदा जमाले रूखे मुस्तफा पे रहती है,
बलन्द कितनी नज़र है मदारे आलम की।

जिसे भी चाहें विलायत से सरफराज करें,
निगाह में वो असर है मदारे आलम की।

न छू सकेंगे ज़माने के हादसात उसे,
पनाह में जो बशर है मदारे आलम की।

यकीन है रहे हक से भटक नहीं सकता,
वह जिस पे खास नज़र है मदारे आलम की।

मदारियों के दिलों में तू ढूंढ अय महज़र,
मुझे तलाश अगर है मदारे आलम की।

फ़ज़ाए हिन्द

फिर कहे क्यों न खुश होके हर कादिरी,
तेरे साए में हम आ गये, आ गये।
जब कहें प्यार से जानेमन जन्नती,
तेरे साए में हम आ गये, आ गये।

उर्स की रात है कह रहे है सभी,
तेरे साए में हम आ गये, आ गये।
हमकों फ़ज़लो करम की नहीं कुछ कमी,
तेरे साए में हम आ गये, आ गये।

ज़िन्दगी की थकन और न गम की चुभन,
मिल गया मिल गया दामने पन्जतन।
जब ब फज़ले खुदा और ब फैज़े नबी,
तेरे साए में हम आ गये, आ गये।

हो करम ऐ शाहा ऐ मदारूलवरा,
हर तरफ करबला है कयामत बपा।
देखकर ये फज़ा हर तरफ हिन्द की,
तेरे साए में हम आ गये, आ गये।

रश्के हर गुलसिताँ और जन्नत निशाँ,
आपका आस्ताँ ऐ मदारे जहाँ,
है यहाँ वाकई हर तरफ ज़िन्दगी,
तेरे साए में हम आ गये, आ गये।

हो कछैछा या धरती हो कल्यान की,
वो हो कोलार या अर्ज़े जम्मन जती।
कहते हैं मावरी और बहराईची,
तेरे साए में हम आ गये, आ गये।

दौरे गम में खुशी का ख़ज़ाना मिला,
ज़ुल्फे सरकार का शामियाना मिला।
दिल को जन्नत मिली रूह को ताज़गी,
तेरे साए में हम आ गये, आ गये।

अन्दाज़े हिदायत

इक दिल पे है दुनियाँ के सितम कुतबे दो आलम,
रखना मेरी ग़ैरत का भरम कुतबे दो आलम।
हक ये है कि दुनियां की हर एक राह गुज़र में,
ताबा है तेरे नक्शे कदम कुतबे दो आलम।
बिगड़ी हुई तकदीर संवरना नहीं मुश्किल,
फरमां दें अगर चश्में करम कुतबे दो आलम।
ख़िलवत में है जलवत तेरी यादों के सहारे,
मुझको नहीं तन्हाई का गम कुतबे दो आलम।
कब जाने मुझे मन्ज़िले मकसूद मिलेगी,
राही हूँ मगर सुस्त कदम कुतबे दो आलम।
अल्लाह रे आका तेरा अन्दज़े हिदायत,
बोल उट्ठे ये पत्थर के सनम कुतबे दो आलम।
है इसके मुकद्दर में दो आलम की बुलन्दी,
जो सर तेरी चौखट पे है ख़म कुतबे दो आलम।
महज़र भी है मख़दूम ज़माने की नज़र में,
लेकर तेरी नगरी में जनम, कुतबे दो आलम।

सुहाना ख्वाब

बिछड़ के तुझसे गुलिस्ताँ भी एक अज़ाब लगे,
तेरे जवार के कांटे हमें गुलाब लगे।
रूख़े मदार पे ऐसा हमें नकाब लगे,
कि जैसे अब्र के पर्दे में आफ़ताब लगे।
सुरूरे इश्के मदारे जहाँ का क्या कहना,
न छूटे उम्र में, मुँह जिसके ये शराब लगे।
है जिसपे आपकी चश्में करम मेरे आका,
उसे हयात का हर लम्हा, कामयाब लगे।
तुम्हारे बहरे करम से है वास्ता जिसका,
उसे उमड़ता समन्दर भी एक सुराब लगे।
उठा दें आप जो परदा रूख़े मुनव्वर से,
तो फिर हकीकते कोनैन बे नकाब लगे।
मदारे दो जहाँ कुतबे मदार जिन्दा वली,
हमें है प्यारा तुम्हारा हर एक ख़िताब लगे।
तेरे जमाल से रिश्ता है जिसकी रातों का,
न क्यों फिर उसको सुहाना हर एक खुवाब लगे।

वुफूरे करम

ख़ुशी में झूमता हर मेहमान लगता है।
मदार तेरा करम मेहरबान लगता है।
तेरे वजूद से कायम है आसमां का निज़ाम,
तेरी बका पे मदारे जहान लगता है।
तेरे ही बारे में लाख़ौफ कहता है कुरआन,
वलातकूलू का तू तरजुमान लगता है।
दिखाए आँखे ये सूरज की है मजाल कहाँ,
तुम्हारा लुत्फे करम सायबान लगता है।
हैं औलिया यहाँ हर सिम्त मिस्ले काहकशाँ,
दयारे कुतबे जहाँ आसमान लगता है।
तेरे वुफूरे करम ने लगा दिये ताले,
ज़बान वाला यहाँ बेज़बान लगता है।
करम है तुझपे मदारे जहां का ऐ महज़र,
हरा भरा जो तेरा गुलसितान लगता है।

अपना फ़साना

घिरा हूँ बलाओं से मुझको बचाना
कुत्बे ज़माना, कुत्बे ज़माना।

न अपना फलक है न अपनी ज़मीं है,
तुम्हारे सिवा अपना कोई नहीं है।
सुनाऊँ भी किसको मैं अपना फसाना,
कुत्बे ज़माना, कुत्बे ज़माना।

सरे हश्र कोई किसी का न होगा,
गुनहगार हूँ है तुम्ही पर भरोसा,
गुलामों को अपने न तुम भूल जाना,
कुत्बे ज़माना, कुत्बे ज़माना।

है गर्दिश में क़िस्मत का अपनी सितारा,
फज़ाए गुलिस्तां है बरहम ख़ुदारा,
नरोगन मेरा बिजलियों से बचाना,
कुत्बे ज़माना, कुत्बे ज़माना।

हो नूरे नज़र तुम्ही प्यारे नबी के,
हो लख़्ते जिगर फातेमा ओ अली के,
हुसैनी व हसनी तुम्हारा घराना,
कुत्बे ज़माना, कुत्बे ज़माना।

हुई तुम से आसां ज़माने की मुश्किल,
सफीने ने पाया पुरादों का हांसिल,
ज़माने के तुम हो तुम्हारा ज़माना,
कुत्बे ज़माना, कुत्बे ज़माना।

फना को भी इज़्ने बकां देने वाले,
गुलामों को आका बना देने वाले,
हमारा भी खुफ्ता मुकद्दर जगाना,
कुत्बे ज़माना, कुत्बे ज़माना।

गमो रंज की धूप जिस वक्त फैली,
तो उस वक्त महज़र इनायत ये देखी,
तुम्हारा करम बन गया शामियाना,
कुत्बे ज़माना, कुत्बे ज़माना।

मसरूफ़े दुआ

हर जानिब मेला सा लगा है, हर कोई मसरूफ़े दुआ है,
सबकी एक पुकार हाज़िर हैं सरकार हम हाज़िर है।

गलियों गलियों घूम रहे है आका के मस्ताने,
कोई उनकी चादर चूमें कोई सर पर ताने,

कहने का अन्दाज़ जुदा है लेकिन सबकी एक सदा है,
हम तुम पर बलिहार हाज़िर है सरकार हम हाज़िर है।

उनकी सख़ावत अल्लाह अल्लाह जो मांगे सो पाऐं,
आलमगीर अदब से आएं दामन भर ले जाएं,

फैज़े विलायत जब बंटता है देख के मुन्किर भी कहता हैं,
दाता शाह मदार हाज़िर है सरकार हम हाज़िर है।

शेख मोहम्मद लाहौरी सा इश्क कहां है मुमकिन,
घर से तवाफ़े खान ए काबा करने चले थे लेकिन,

दुनियाँ की आँखों ने देखा कुतबे जहाँ को जान के काबा,
गिर्द फिरे सौबार हाज़िर है सरकार हम हाज़िर है।

किसको सुनाएं अपनी विपता कौन मदद को आये,
अपना भी और बेगाना भी देख हमें कतराए,

दुख के बादल छाये सर पर और बला मंडराए सर पर
कोई नहीं गमख्वार हाज़िर है सरकार हम हाज़िर है।

सारे साथी मतलब के हैं, किससे लगाएं आस,
दुनियाँ है एक रेत का दरिया कैसे बुझाएं प्यास,

आपका जब महज़र कहलाये फिर किसकी चौखट पर जाए,
बैरी है संसार हाज़िर है सरकार हम हाज़िर है।

अदा ए मुस्तफा

दूरिये तैबा है क्या और हाज़री क्या चीज़ है,
हम से पूछो मौत क्या है ज़िन्दगी क्या चीज़ है।

दिल में जिसके है ग़मे तैबा ये उससे पुछिये,
बेकसी कहते है किसको, बेबसी क्या चीज़ है।

अपनी आँखे उनके तलवों से है मलते जिबराइल,
है खुदा भी उनका तालिब आदमी क्या चीज़ है।

हज़रते सीद्दीके अकबर ही बतायेंगे ये राज़,
दौलते दुनियाँ है क्या और मुफलिसी क्या चीज़ है।

कत्ल की नीयत से आए और आदिल बन गए,
खुल गया सब पर के मरज़ी ए नबी क्या चीज़ है।

एक हबशी को दो आलम की हुकूमत मिल गयी,
देख ले दुनियाँ के बन्दा परवरी क्या चीज़ है।

कुछ धड़कता था मेरे सीने में जब तैबा में था,
सोचता हूँ वक्ते रूख़्सत रह गई क्या चीज़ है।

ये रूकू महज़र ये सजदे ये कयाम और ये कऊद,
सब अदा ए मुस्तफा है बन्दगी क्या चीज़ है।

हौसला दो मुस्तफा

प्यास से हैं जाँ बलब कुछ हौसला दो मुस्तफा,
ऊंगलियों से फैज़ के चश्में बहा दो मुस्तफा।

कसरते गम में भी जीने की अदा दो मुस्तफा,
दर्द अपना दिल के गोशों में बसा दो मुस्तफा।

खानये बे नूर है इसको ज़िया दो मुस्तफा,
शम्मा अपने इश्क की दिल में जला दो मुस्तफा।

जिससे आकाये ज़माना बन गए हज़रत बिलाल,
ऐसा जज़्बा इश्क का बहरे खुदा दो मुस्तफा।

गुल न कर पायें जिसे जुल्मों जफा की आंधियाँ,
एक चराग ऐसा मेरे दिल में जला दो मुस्तफा।

गुमरही की जुल्मतों ने घेर रक्खा है मुझे,
इन अन्धेरों में ज़रा सा मुस्कुरा दो मुस्तफा।

मैं किसी के भी सहारे का तमन्नाई नहीं,
बेसहारा हूँ मुझें तुम आसरा दो मुस्तफा।

महेव करके आँख से हर मन्ज़रे कौनेन को,
अपनी सूरत का मुझे शैदा बना दो मुस्तफा।

वो जो महज़र औलिया अल्लाह का है रास्ता,
बहरे कुत्बे दो जहाँ मुझको दिखादो मुस्तफा।

मताये इश्क़े नबी

ख़िलाफे आदाबे इश्क होगा,
न देख नज़रें उठा-उठा के,
ये जलवागाहे हबोब हक है
यहा पे चल सर झुका-झुका के।

फिराके तैबा में क्या बतायें,
न जाने कितनी गुज़ारी रातें,
चिरागे उम्मीदों बीम मैने,
जला जला के बुझा-बुझा के।

मिली जो इश्के नबी की दौलत,
ये मेरे आका की है इनायत,
इसीलिये दिल को रख रहा हूँ,
हर एक नज़र से बचा-बचा के।

है सर में इश्के नबी का सौदा,
निगाह में है जमाले खज़रा,
चली घटायें है सिम्ते तैबा,
किसी के दिल को रूला-रूला के।

है सामने रोज़ा ए मुनव्वर,
मगर है पहरा निगाहो दिल पर,
है देखता जालियों से ज़ायर,
नज़र को अपनी चुरा-चुरा के।

है जानो दिल आपके हवाले,
हुज़ूर हमको ये दुनियाँ वाले,
समझ के मिट्टी का एक घरौन्दा,
बिगाड़ते है बना-बना के।

चलें इशारों पे चाँद सुरज,
हर एक ज़र्रे पे है हुकूमत,
ऐ मेरे आका ये दोनो आलम,
फ़िदा हैं तेरी अदा-अदा के।

ये दीनों ईमान के लुटेरे,
जो बस चलेगा तो लूट लेंगे,
मताए इश्के नबी को महेज़र,
रखो जहाँ से बचा-बचा के।

दुरुदो सलाम

हर एक नबी ने उनका किया एहतराम है,
कितना बलन्द मेरे नबी का मकाम है।

मुनकर नकीर कर न सके फिर कोई सवाल,
पाया जो मेरे लब पे मोहम्मद का नाम है ।

उभरे जो आफ़ताब तो हैरत की बात क्या,
हाथों में उनके दोनों जहाँ का निज़ाम है ।

मैं पढ़ रहा हूँ नाते नबी और बज़्म में,
जारी हर एक लब पे दुरूदो सलाम है।

अनवारे सुबह होते है सौ जान से फ़िदा,
कितनी हसीन अर्ज़े मदीना की शाम है।

ऐ गर्दिशे ज़माना न महेज़र से तु उलझ,
मालुम है तुझे ये नबी का गुलाम है।

चश्मे तसव्वुरात

कितना करम है देखिये मुझ पर हुज़ूर का,
मशहूर मैं गुलाम हूँ घर-घर हुज़ूर का।

महफुज़ वो रहेगा कयामत की धूप से,
दामन रहेगा जिसके भी सर पर हुज़ूर का।

इस बात का कलामे इलाही गवाह है,
होगा न हो सका कोई हमसर हुज़ूर का।

चश्में तसव्वुरात के कुर्बान जाइये,
रोजा है मरे सीने के अन्दर हुज़ूर का।

आका अगर बुलाये तो हो हाज़री नसीब,
हर चन्द ये गुलाम है बेज़र हुज़ूर का।

दो नीम माहताब इशारे में आफ़ताब,
और करते विर्द कलमा हैं पत्थर हुज़ूर का।

जब जाके लामकान से आये मकान में,
हिलती थी कुण्डी गर्म था बिस्तर हुज़ूर का।

आरज़ू का दिया

गीत यारों मोहम्मद के गाया करो,
और अक़ीदत के मोती लुटाया करो।

जब हवाओं मदीने में जाया करो,
निकहते मुस्तफ़ा ले के आया करो।

जब किसी की ज़बां पर हो नामे नबी,
तुम दुरूदो की डाली सजाया करो।

अज़मते मुस्तफ़ा दिल में हो जा गुज़िं,
अपने बच्चों को नातें सुनाया करों।

काफ़िले वाले जब सुए तैबा चलें,
राह में उनके पलकें बिछाया करो।

मुस्तफ़ा तो सरापा हैं अबरे करम,
आँसियों रहमतों में नहाया करो।

आरज़ू का दिया जब भी बुझने लगे,
लौ हबीबे खुदा से लगाया करो।

सुन्नते मुस्तफ़ा तो है महेज़र यही,
दुश्मनों को गले से लगाया करो।

साँसो का जीवन

कब से तरसत है मोरी नजरिया,
कैसे आऊँ मैं तैबा नगरिया।

नूर वाले की धरती पे जाके,
कहना युँ चाँद ऐ अमिना के,
राह रोके है बैरन अन्धरिया,
कैसे आऊँ मैं तैबा नगरिया।

क्या कहें जो व्यथा है हमारी,
देख ले जो दशा है हमारी,
कहीयो आका से ओरी बैयरिया,
कैसे आऊँ मैं तैबा नगरिया।

चैन पल भर न पावत है नैना,
नीर ऐसे बहावत है नैना,
जैसे सावन मा बरसे बदरिया,
कैसे आऊँ मैं तैबा नगरिया।

है निराधार सांसों का जीवन,
आका देखे बिना तुमरो आंगन,
बीत जाये न यूँ ही उमरिया,
कैसे आऊँ मैं तैबा नगरिया।

जियरा व्याकुल है तरसत है नैना,
तारे गिन-गिन के बीतत है रैना,
क्या बुलइयौ न अपनी दुअरिया,
कैसे आऊँ मैं तैबा नगरिया।

दुख के सुरज से व्याकुल है महज़र,
दर्द की धूप छायी है सरपर,
डाल दो अपनी नूरी चदरिया,
कैसे आऊँ मैं तैबा नगरिया।

खानये साबू

साबू सिद्दीक मुसाफिर खाना मुम्बई

अब दिल की तमन्ना है मदीने की तरफ चल,
एक हश्र सा बरपा है मदीने की तरफ चल।

दुनियाँ सितम आरा है मदीने की तरफ चल,
कोई नहीं अपना है मदीने की तरफ चल।

सरकार के रोज़े का वो पुरनूर नज़ारा,
नज़रों में मचलता है मदीने की तरफ चल।

उस दर पे सुकुँ पायेगा क्यों ऐ दिले मुज़तर,
दुनियाँ में भटकता है मदीने की तरफ चल।

दुनियाँ के नज़ारों से बहलता ही नहीं दिल,
नज़रों का तकाज़ा है मदीने की तरफ चल।

हर सिम्त से आती है दुरूदो की सदायें,
माहौल का मनशा है मदीने की तरफ चल।

क्यों महज़र अली ख़ानये साबू में पड़ा है,
आका ने बुलाया है मदीने की तरफ चल।

जन्ज़ीर-ए-निसबत

हम तो ये समझते है के महबुबे खुदा हो,
अब आगे ख़ुदा जाने के तुम कौन हो क्या हो।

कुछ मुझको भी सरकार के सदके में अता हो,
सरकार मेरे आप की इतरत का भला हो।

कुरआन भी जब करता है तौसीफ़ मोहम्मद,
फिर कैसे भला नात का हक हम से अदा हो।

वो क्यों हो किसी नेअमते कौनेन का तालिब,
सरकारे मदीना के जो टुकड़ो पे पला हो।

जलते हुये सूरज की शुआओं का असर क्या,
जब साया फिगन दामने महबुबे ख़ुदा हो।

बस थोड़ी सी ख़ाके दरे सरकार उड़ा ला,
इतना तो करम मुझ पे कभी बादे सबा हो।

मुमकिन नहीं उसको जला पाये जहन्नम,
जो आतिशे फुरकत में मदीने की जला हो।

जिबरील को किस तरहा से इरफ़ान हो तेरा,
समझे वो तुझे जो तेरे रूतबे से सिवा हो।

सरकार इसे आपका कहती है ये दुनियाँ,
महज़र से ये ज़न्जीर-ए-निस्बत न जुदा हो।

बदरे कामील

ऐ मेरे दिल ये बता हाल तेरा क्या होगा,
सामने आँखों के जब गुम्बदे ख़ज़रा होगा।
वो जहाँ नूर शबो रोज़ बरसता होगा,
हाँ वही जन्नते दिल गुम्बदे ख़ज़रा होगा।
ख़्वाब में जिसने भी सरकार को देखा होगा,
ख़्वाब झूठा नहीं हो सकता वो सच्चा होगा।
जिसने आका के पसीने को लगाया होगा,
नस्ल का उसकी हर एक फ़र्द महकता होगा।
रब ने तख़लीक किये जिसके लिये दोनों जहां,
सोचिये क्या कोई उसके लिये परदा होगा।
क़ब्र में राज अन्धेरों का तो होगा लेकिन,
उनके आने से उजाला ही उजाला होगा।
सच बता कैसे थे आका मेरे बदरे कामील,
तूने तो सरवरे कौनेन को देखा होगा।
गम उसे अपनी यतीमी का न होगा महज़र,
जिसके सर पर मेरे सरकार का साया होगा।

विपदा की दिवार

नदिया गहरी, नय्या टुटी, दूर किनारा है,
तुमरो सहारा है नबी जी।

गीत सुनायें किसको मन के,
मीत हो तुम ही सब दुखियन के,
तुमरे सिवा ऐ शाहे मदीना कौन हमारा है,
तुमरो सहारा है नबी जी।

चारों ओर है बादल काले,
ऐसे में किस को कौन संभाले,
पापों की सनकी पुरवाई मन दुखयारा है,
तुमरो सहारा है नबी जी।

बाका मन कहि पर पतियाये,
का से दया की आस लगाये,
वो दुखयारा जिसका बैरी जीवनधारा है,
तुमरो सहारा है नबी जी।

मुश्किल में हूँ कैसे बसर हो,
अब तो करम की एक नज़र हो,
गर्दिश में ऐ रहमतवाले अपना सितारा है,
तुमरो सहारा है नबी जी।

अपने जो थे सो बेगाने हैं,
राह कठिन हम अनजाने हैं,
जिसका जग मा कोई नहीं है उसने पुकारा है,
तुमरो सहारा है नबी जी।

मजबूरी की सख़्त घड़ी है,
बिपदा की दीवार खड़ी है,
वरना दूर रहे तैबा से, किसको गवारा है,
तुमरो सहारा है नबी जी।

दामने मसर्रत

करूँ नाज़ मैं न कैसे मेरा मुद्दआ मिला है,
मैं हूँ खुशनसीब मुझको गमे मुस्तफा मिला है।

दरे मुस्तफा से मुझको ये न पुछो क्या मिला है,
जो करीब रब से करदे वही रास्ता मिला है।

हुआ फज़ले किब्रियाई, मिटी ज़ुल्म की खुदाई,
तेरी रहमतों के सदके बखुदा खुदा मिला है।

भला फिर खुदा की रहमत करे प्यार क्यों न तुझसे,
ऐ बिलाल तुझको इश्के शहे अम्बीया मिला है।

ऐ मेरे हुज़ूर उसको भला क्या कमी जहाँ में,
जिसे आप मिल गये है तो उसे खुदा मिला है।

वो जो आप रहके भुखा, भरे पेट दुसरों का,
सिवा आपके जहाँ में नहीं दुसरा मिला है।

जहाँ सब्त हैं नुकुशे कफेपा मेरे नबी के,
महोमेहरो कहकशाँ का वहीं सर झुका मिला है।

ब्रखुदा अय नूर वाले तेरे दम से हैं उजाले,
तेरे घर का बच्चा-बच्चा हमें नूर का मिला है।

ऐ मेरे हुज़ूर इसकी रहे लाज दो जहाँ में,
ये मेरे लहू में तेरा जो लहू घुला मिला है।

भरा उसका पल में महज़र है मसर्रतों से दामन,
शहे अम्बीया को जब भी कोई गमज़दा मिला है।

मुस्तफ़ा आ गये

अब्र-इख़लास के हर तरफ छा गये,
आ गये आ गये मुस्तफ़ा आ गये।

औसो खज़रज के दिल की कुदूरत मिटी,
आलमे कुफ्र में पड़ गयी खलबली,
रूमी और पारसी सुनके घबरा गये,
आ गये आ गये मुस्तफा आ गये।

आफताबे अरब से जो फूटी किरन,
जगमगाने लगी अन्जुमन-अन्जुमन,
दिल जो तारिक थे रोशनी पा गये,
आ गये आ गये मुस्तफ़ा आ गये।

इस जहाँ से बलन्दीयो पस्ती मिटी,
और ज़मी आसमां के गले मिल गयी,
हर तरफ परचमे अम्न लहरा गये,
आ गये आ गये मुस्तफ़ा आ गये।

मोमिनों को मिला कुर्ब अल्लाह का,
औलिया को मिली दौलते बेबहा,
अम्बीया ओ रूसूल मुद्दआ पा गये,
आ गये आ गये मुस्तफा आ गये।

गम की तारिकीयों को मिली रोशनी,
भगी आँखों से महज़र जो आवाज़ दी,
मेरी आँखों के आँसु जिला पा गये,
आ गये आ गये मुस्तफा आ गये।

वफा का आईना

मुनादी ने दी जिस दम ये निदा सरकार आते है,
दो आलम का मुकद्दर जाग उठा सरकार आते है।
जफाओं का अन्धेरा छंट गया सरकार आते है,
चमक उठा वफा का आईना सरकार आते है।
करम की छा गयी हरसु घटा सरकार आते है,
सितम का दौर अब रूख़्सत हुआ सरकार आते है।
हसद से, करज से, नफरत से और गर्दे कुदुरत से,
दिलो का साफ करो आईना सरकार आते है।
हुआ फिर अमन कायम और मज़ालिम का भरम टुटा,
पुकार उठा जो दिल मज़लुम का सरकार आते है।
अदम लहुज़ रखना जश्ने मिलादे रिसालत में,
के इसी महफिल में ऐ अहले वफा सरकार आते है।
तुम्हारा राज़ मिटकर ही रहेगा सारे आलम से,
उजालो ने अन्धेरो से कहा सरकार आते है।
लरज़ उठी है महेज़र कुफ्र के महलों की बुनयादें,
बुतों ने टुट कर सजदा किया सरकार आते है।

ज़मीं का मुक़द्दर

ज़मीं का चमका मुकद्दर हुज़ूर आते हैं,
है ज़र्रा-ज़र्रा मुनव्वर हुज़ूर आते हैं।

तू अपनी ख़ूबिये किस्मत पे क्यों न नाज़ करे,
हलीमा दाई तेरे घर हुज़ूर आते हैं।

चमक रही है गुज़रगाह कहकशाँ बन के,
फलक से होके ज़मीं पर हुज़ूर आते हैं।

हजार तुझको बलाओं ने घेर रखा है,
न फिक्र कर दिले मुज़्तर हुज़ूर आते हैं।

ख़ुशी से मौत लगाई है आशीको ने गले,
सुना जो कब्र के अन्दर हुज़ूर आते हैं।

जहाँ पे महफिले मीलाद होती है महज़र,
मुझे यकीं है वहाँ पर हुज़ूर आते हैं।

चिराग़े हलब

शम्मे उम्मीद ख़ामोश सी है,
लौ मदारे जहाँ से लगी है।

मैं मुसाफिर हूँ तारीक शब का, ढूंढता हूँ सहर का उजाला,
देखिये कब किरन फूटती है, लौ मदारे जहाँ से लगी है।

जाने तक़दीर में क्या लिखा है, हर क़दम एक नया हादसा है,
जब मुसीबत कोई आ पड़ी है, लौ मदारे जहाँ से लगी है।

यूँ तो कोई नहीं है सहारा, आसरा है चरागे हलब का,
जिसने दुनिया को दी रौशनी है, लौ मदारे जहाँ से लगी है।

है उन्ही पर मदार आखरत का, है उन्हीं के सुपुर्द अपनी दुनिया,
रहनुमाई न कुछ रहबरी है, लौ मदारे जहाँ से लगी है।

होगा कब मेरी शब का सवेरा, मेरे दिल में है गम का बसेरा,
यास है आलमे बेकसी है, लौ मदारे जहाँ से लगी है।

हर तरफ नफसी-नफसी का आलम, कोई हमदर्द है और न हमदम,
हाँ कुछ उम्मीद है तो यही है, लौ मदारे जहाँ से लगी है।

मेरा बेड़ा भंवर में फंसा है, और बदजन मेरा नाखुदा है,
इक अजब मोड़ पर ज़िन्दगी है, लौ मदारे जहा से लगी है।

जीस्त है यासो आलाम का घर, सख्त बेचैन है कलबे महज़र,
गर्दिशे वक्त दुश्मन बनी है, लौ मदारे जहाँ से लगी है।

दारुल उलुम अहले सुन्नत गुलशन–ए–मदार

नई आबादी, नूर कॉलोनी, मन्दसौर (म.प्र.)

~~ किताब मिलने का पता ~~

खादीम साबीर शाह मदारी

दरगाह मदार चिल्ला शरीफ, गोंदी चौक, मन्दसौर

58, सज्दा मंज़िल, नई आबादी, मन्दसौर (म.प्र.), Mob: 9826668688, 9009285045